International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 758-760

भूषण के काव्य में राष्ट्रीय भावना एक विश्लेषण

नीलम कुमारी
शोधार्थी (हिन्दी–विभाग), एम.डी.यू., रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय भावना का सम्बन्ध किसी भी राष्ट्र के सामूहिक जीवन उन्नति एवं आत्मगौरव से है। जाति या राष्ट्र के व्यक्तियों की एक साथ हिल मिलकर रहने तथा सामूहिक रूप में अपने देश की रक्षा करना तथा उसकी उन्नीति में सहायक होने या उन्नत बनाने की इच्छा करना ही राष्ट्रीय भावना है। यह भावना अपने देश के लिए अगाध भक्ति में संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति गौरव भावना रखने में, देश की स्वतन्त्रता की रक्षा में, विदेशी शासन के प्रति घृणा एवं द्वेष की भावना रखना तथा देश सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक स्थितियों में सुधार करने के राष्ट्रीय भावना के अन्तर्गत ही आती है। जातीय जीवन में राष्ट्रीय कविता का विशेष महत्व है। देशभक्ति देश की एकता एवं अखंडता तथा विदेशियों का विरोध करना ही राष्ट्रीय कविता का मुख्य उद्देश्य होता है। राष्ट्रीयता कविता के सम्बन्ध में एक तथ्य यह भी दृष्टव्य है कि इस प्रकार की कविता का सृजन एवं विकास विशिष्ट परिस्थितियों में ही अधिक तीव्र गति से होता है। राष्ट्र निर्माण एवं जनजीवन के उत्थान में इस राष्ट्रीय काव्य का एक विशेष स्थान होता है तथा उद्देश्य की पूर्ति हो जाने के उपरान्त ऐसे काव्य का महत्व भी कम हो जाता है।

हिन्दी के रीतिकालीन कवियों में भूषण का एक विशिष्ट स्थान है। रीतिकाल की परिस्थितियों का भूषण पर प्रभाव पड़ा है। उस समय में मुगल साम्राज्य पर औरंगजेब का राज्य था। औरंगजेब एक अत्याचारी शासक था। वह अपने पिता को कैद में डालकर तथा भाईयों के खून में अपने हाथ रंग कर गद्दी पर बैठा था। हिन्दुओं के प्रति इसकी नीति कठोर थी। उसने उन पर जजिया कर लगा दिया था। हिन्दुओं के मन्दिरों को तुड़वाकर वह उसी स्थान पर उन्ही पत्थरों से मजिस्दों का निर्माण करवाता था तथा देव प्रतिमाओं को खंडित करवा देता था। मुसलमान के एक वर्ग के प्रति भी यह बड़ा अत्याचार करता था। दक्षिण में बीजापुर, गोलकुंडा आदि की प्रसिद्ध मुसलमानी रियासतें थी। मुगल दरबार से प्रायः इनका युद्ध होता रहता था।

ऐसी राजनीतिक परिस्थिति में और शिरोमणि महाराज शिवाजी एक उदयीमान नक्षत्र के समान राजनीतिक क्षितिज पर उदित हुए। उन्होने अत्याचारियों का सामना करने तथा हिन्दु साम्राज्य को स्थापित करने का स्वपन देखा। भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता को विगलित होने से बचाने का वे उद्यम करने लगे। अफजल खां को मार देने शाइस्ताखां को पूना से भगा देने तथा सूरत की लूट आदि ऐसी घटनाएं घट गई जिससे कि शिवाजी का यश सर्वत्र फैल गया। भूषण भी राष्ट्रीय विचारों का कवि था। मुसलमानों की स्वेच्छा चारिता उसे पसंद न थी। उन्होने हिन्दुओं पर अत्याचार कर प्रायः सभी हिन्दु नरेशों को अपने अधीन कर लिया था। भूषण ने इस सम्बन्ध में शिवा बावनी में एक पद अलंकारिक भाषा में लिखा है।:–

कूरम कमल कमधुज है कदमफूल
गौर है गुलाब राना केतकी विराज है।
पांडरि पंवार जूही सोहत है चन्द्रावल,
सरस बुन्देला सो चमेली साज बाज है।।
भूषण भनत सुचकुन्द बड़गूजर है,
बघेले बसंत सब कुसम समाज है
लेइ रस एतेन को बैठि न सकत अहै,
अलि नवंरगजेब पंपा सिवराज है।।

इस पद में उस समय के सभी वीर राजाओं को फूलों की उपमा देकर कवि ने औरंगबेज की भ्रमर की उपमा से विभूषित किया है। उदयपुर के राणा को उन्होने केतकी का फूल कहा, जहां यह बड़ी कठिनाई से पहुंच सका था। उन पर अधिकार कर सका था। शिवाजी को चम्पा का फूल कहा जहां वह पहुंच ही सका।

हिन्दी साहित्य के इतिहास का यह सौभाग्य ही कहा जा सकता है कि उसका आरम्भ ही वीर रस प्रधान काव्यों से होता है। उस समय के सबसे प्रसिद्ध कवि चन्दरबरदाई ने महाराज पृथ्वीराज को विदेशी आक्रमणकारी मोहम्मदगौरी से युद्ध करते भी देखा था। उनकी भाषा में ओज गुण कूट–कूट कर भरा हुआ है। लेकिन उसमें श्रृंगार का भी अदभुत साम्य है। इस काल के चारण कवियों की एक विशेषता थी कि ये राजा का अतिशयोक्तिपूर्ण यशोगान ही करते थे। कभी–कभी तो यह देश में ही एक राजा के विरूद्ध दूसरे राजा को भी लड़वा दिया करते थे क्योंकि उस समय देश छोट–छोटे टुकड़ों में बंटा हुआ था तथा राष्ट्र प्रत्येक राजा की राज्यसीमा को माना जाता था। फलतः कवियों की राष्ट्रीयता भी उसी सीमा तक सीमित थी। अंखड भारत या सम्मिलित हिन्दु जाति धर्म, संस्कृति एवं सभ्यता का प्रश्न उनके सामने न था। आज भी भावना के अनुरूप हमें उस काल के कवियों की राष्ट्रीयता अत्यन्त संकुचित लगती है। भक्तिकाल में हिन्दु और मुसलमानों में एक मेल की भावना थी। मुसलमानों के आ जाने से राजनीति दृष्टि से राजाओं में उनका प्रतिरोध समाप्त करने की शक्ति न थी। उस समय यहां के धार्मिक आचार्यों के समक्ष हिन्दु संस्कृति को बचाने का प्रश्न था। यह काम राजाओं पर न छोड़ कर इन आचार्यो ने स्वंय किया। कविता राजमहिलों और दरबारों से निकल कर मन्दिर और मठों में पहुंच गई और यहां पर भी भगवान के प्रति विनय के गीत उनके वैभव के गीत और श्रृंगार मिश्रित भक्ति के गीत गाए जाने लगे।

रीतिकाल तक ओत प्रोत हिन्दु नरेश श्रृंगारिकता वैभव प्रर्दशन तथा विलासिता के पंक में फंस चुके थे। मुगल दरबार की चकाचौंध में सभी प्रभावित थे अतः उसकी नकल उन्हे आगे दरबारों में की।

शिवाजी का दरबार इस वातारण से अछूता था। उनका ध्यान हिन्दु राष्ट्र की स्थापना तथा देश धर्म, संस्कृति और सभ्यता की रक्षा करने की ओर था। संयोग से भूषण में भी यही सब भावनाएं थी

और जब ये उनके दरबार में पहुंचे तो वहां उनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। और शिरोमणि शिवाजी जैसे आश्रयदाता को पाकर भूषण में अपने को धन्य समझा तथा अपनी वीर रक्षात्मक कविता द्वारा खोई हुई हिन्दु जाति के हृदय मे वीरता एवं जातीय गौरव की भावनाओं को जगाने का प्रत्यन किया। इसी कारण उनकी कविता जातीय भावनाओं से ओत प्रोत है शिवाजी के हृदय में राष्ट्रहित की भावना कूट कूट कर भरी हुई थी। हिन्दु धर्म की असीम श्रद्धा थी। वो ब्राहमणों तथा दीन दुखियों की रक्षा करने की भावना उनके मन में थी। भूषण ने शिवाजी की दानशीलता, वीरता तथा धर्म रक्षा की भावना का सुन्दर निरूपण शिवा बावनी में किया हैः–

औरंगजेब का हिन्दु धर्म के प्रति क्रूर चक्र चल रहा था। वह हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन करवाने का जोर देता था। उनकी भावनाओं पर कुठारातघात करने के लिए मन्दिरों को गिरवा देता था और अपने धर्म पीर पैगम्बरों का उत्कर्ष दिखाता था तथा उनकी श्रेष्ठता को सिद्ध करता था। भूषण ने उसकी नीति को लक्ष्य किया तथा इस बात पर जोर दिया कि यदि शिवा जी न होते तो सब की सुन्नत हो गई होती और ये मुसलमान बन गए होते।

देवल गिरवाते फिरवाते निसाल अली,
ऐसे डूबे राव राने सवों गए लबकी।
गौरा गनपति आप औरंग को देत ताप,
आप के मकान सब मारि गए दबकी।।
पीर पगम्बरा दिगम्बरा दिखाई देत,
सिद्ध की सिधाई गई रही बात रब की।
कासिहू से कला जाती मथुरा मसीद होती,
शिवाजी न होतो तौ सुनति होति सब की।।

शिवाजी के धर्मरक्षक रूप को भूषण ने बहुत उभारा है।, इस रूप के साथ ही उनके युद्धवीर, कर्मवीर तथा दानवीर के रूपों को भी उभारा है तथा उनका प्रभावशाली शब्दों में वर्णन किया है। शिवाजी स्वयं वीर थे तथा उनकी प्ररेणा से हिन्दु सैनिकों के मन में भी वीरता के भाव जागृत हो उठे थे। उस पतनशील युग में जब हिन्दुओं में हीन भावना जागृत हो उठी तथा वे अपने आपको निम्न कोटि का व्यक्ति समझते थे शिवाजी ने उनमें सोए हुए हिन्दु धर्म को जगा दिया। भूषण ने भी उनका साथ दिया तथा वीर सैनिकों के उत्साह का वर्णन करते हुए कहते हैंः–

छूटत कमान अरू तीन गोली बानन के,

मुश्किल होति मुरचान हू की ओट मैं।
ताही समै सिवराज हुकुम के हल्ला कियो,
दावा बांधि पर हला वीर भट जोट मै।
भूषन भनत तेरी हिम्मति कहां लौं कहां,
किस्मति इहां लगि है जाकी भर झोट मैं।
तावै दै दै भूषन कगूरन पै पांव दै दै,
अरि सुख घाव दै दै कूदै पर कोटि मैं।।

एक ओर उन्होने शिवाजी के वीर सैनिकों का उत्साह के साथ वर्णन किया, दूसरी ओर उन्होने शत्रुओं की स्त्रियों को अत्यन्त भयभीत दिखाया। शत्रु, सिपाहियों की भावनाओं पर दो तरफ से निरन्तर चोट होने लगी। एक ओर तो शिवाजी का प्रत्यक्ष डर था, दूसरी ओर उनकी स्त्रियां भी उन्हे डराया करती थी और शिवाजी से न लड़ने की सलाह देती थी। भूषण जब इस प्रकार की कविता को वीर सैनिकों को सुनाते थे उस समय रह कर उनके मन में एक भावना उठती थी कि जो सिपाही उनसे लड़ने आ रहे हैं उनमें उत्साह का अभाव है, इसलिए शीघ्र ही जीता जा सकता है। इसी भावना से शिवाजी के सैनिकों में आत्मविश्वास जाग जाता था तथा वे निश्चित ही होते थे कि उनकी जीत अवश्य होगी और होता भी ऐसा ही था। विशाल अविजित समझी जाने वाली मुगलवाहिनी को शिवाजी की सेना से कई बार तथा अनेक स्थान पर कई गुना शक्तिशाली होने पर भी हार खानी पड़ी। सलहेरि के भंयकर युद्ध का वर्णन करते हुए कवि कहता हैः–

कटक कटक काटि कटि से उड़ाय केते,
भूषन भनत मुख मोरे सरकत है।
रनभूमि लेटे अधकटे फरलेटे परे,
रूधिर लपेटे पठनेटे फरकत हैं।

इन भंयकर युद्धों के कारण मुसलमानों के घरों की अजीब स्थिति हो गई है। कटक के कट जाने पर उनके हरम खाली होने लगते हैं, क्योंकि वीर सैनिक मुगलों या शत्रुओं के पड़ावों को अवश्य लूटते थे। शिवाजी की कठोर आज्ञा के कारण वे उनकी स्त्रियों को हाथ न लगा सकते थे।

आगने अगारन हूं फांदती कगारन छूवै,
बांधती न बारन मुखन कुम्हिलानियां।
कीबी कहें कहा और गरीबी गहे भागी जांहि,
बीबी गहे सुथनी सुं नीबी गहे रानियां।।

ये वे स्त्रियां थी जो विलासिता में पली थीं तथा जिनके लिए हजारों दास–दासियां थी। इनकी महलों में रहते यह अवस्था थी।

उतंरि पलंग ते न दियो है घरां पं पग,
ये स्त्रियां ही अब– तेऊ सगबग
निसदिन चली जाती है।
अति अकुलाती मुरझाती ना छिपाती गात
बात न सोहाती बोलै अति अनखाती है।

शिवाजी की यह विजय उनकी अपनी व्यक्तिगत विजय न थी बल्कि यह हिन्दु जाति की विजय थी। इस कारण ही शिवाजी के शौर्य पराक्रम के इस वर्णन का वीर सैनिक तथा जनता उत्साह के साथ स्वागत करते थे।

शिवा बावनी में शिवाजी के मुगल दरबार में पहुंचने का तथा औरंगजेब से भेंट करने का वर्णन दो पदों में किया गया है। औरंगजेब ने कई हजार गदाधारियों को दरबार में खड़ा किया तथा राजा जसवन्त सिंह को अत्यन्त विश्वासपात्र समझ कर अपने पास बुला लिया तथा सभी स्वामिभक्त सरदारों को भी अपने पास ही ठहरा लिया। इतना प्रबन्ध करने पर भी वह झिझक के साथ गुसलखाने के समीप ही शिवा जी से मिला। उमरावों की कतार भी वहां थी लेकिन शिवाजी को हथियार लाने की मनाही थी। इस अवस्था में भी झिझक के साथ मिलने पर शिवाजी के आतंक की ही व्यंजना होती है। दरबार में ऐसा प्रबन्ध होने पर भी जब शिवा जी को हजारों सरदारों के पास खड़ा किया गया तो वह तमक गएः–

जानि गैर मिसिल गुसीले धरि उर,
कीन्ही न सलाम न बचन बोले सियरे।
भूषन भनत महावीर बलकन लाग्यो,
सारी पातशाही के उड़ाए गए जियरे।
तमक ते लाल मुख सिवा को निरखि भये

स्याह मुख नौरंग सिपाह मुख पियरे।।

शत्रुओं का विशेषकर मुसलमानों का ऐसा वर्णन पढ़ कर कुछ लोग भूषण को जातीय भावनाओं को अभिव्यक्ति करने वाला कवि कहते हैं। उनको संकीर्ण मुसलमान द्रोही कवि मानते हैं। उनकी दृष्टि में भूषण में अंखड भारत के लिए कोई भाव नही है। वे केवल हिन्दु धर्म के रक्षक थे और उन्होने हिन्दु धर्म के लिए ही शिवा जी की प्रंशसा की। इस सम्बन्ध में एक तथ्य तो यह द्रष्टव्य है कि सभी कालों में राष्ट्रीयता की परिभाषा भिन्न होती है। दूसरी बात कि भूषण पर ऐसा आरोपण करते समय तत्कालीन सम्राट औरंगजेब तथा अन्य मुसलमान बादशाहों की हिन्दुओं के प्रति नीति एवं उनके व्यवहार पर दृष्टिपात कर लिया जाता तो अच्छा होता। तीसरी बात यह है कि उस युग में भले हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाने पर तुले थे। उनकी संस्कृति को नष्ट करने पर तुले हुए थे। मुसलमान युवक हिन्दु युवती से विवाह कर उसे मुसलमान बना सकते थे, पर हिन्दु युवक को भी मुसलमान युवती से विवाह करने पर मुसलमान बनना पड़ता था। अन्यथा उसकी सजा मौत होती थी। क्या हिन्दु अपने देवालयों को गिराते हुए देखते रहते और निरीह रहते थे। जो मुसलमान अपने को भारत का नागरिक समझने से इन्कार करता था क्या उसकी भी प्रशंसा करनी चाहिए थी। भूषण ने अत्याचारी शासक और उसके अनुयायियों के विरोध में भी अपनी आवाज बुलंद की थी। उसका लक्ष्य था समस्त हिन्दु नरेशों और स्वाभिमानी हिन्दुओं को सामूहिक रूप से सुंगठित कर अत्याचारी मुसलमानों के विरूद्ध खड़ा करना। तत्कालीन परिस्थितियों में हिन्दु धर्म तथा हिन्दु संस्कृति की रक्षा करने में सत्रह युवकों को कीर्तिगान किया ही जाना चाहिए था। भूषण ने भी यही किया और पददलित हिन्दु जाति को सगंठित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

इस विवेचन से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि भूषण की राष्ट्रीय भावना में अत्याचारियों की निन्दा तथा उनसे मुक्ति दिलाने वालों की प्रंशसा है। आज भारत का अखंड स्वरूप समक्ष है। हिन्दुओं के साथ मुसलमान, ईसाई तथा अन्य जाति के लोग भी इसे अपना देश समझते हैं। अतः आज धर्मनिरपेक्ष नीति ठीक है। यह राष्ट्रीयता का अंग है। भूषण के समय में ये विदेशी अपने को विदेशी ही मानते थे। इस कारण यहां की भूमि से लगाव न था। इस कारण भूषण ने इनकी निन्दा की इसमें जातीय भावना की तथा अराष्ट्रीय तत्वों का संधान करना व्यर्थ है।

सन्दर्भ

1. भूषण ग्रंथावली, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2004
2. शिवा बावनी समीक्षात्मक ग्रन्थ, प्रो0 सतीश कुमार, अशोक प्रकाशन, दिल्ली 2002
3. भूषण और उनका साहित्य, डा0 राजमल बोरा, विनोद मन्दिर पुस्तक, आगरा 1968
4. संक्षिप्त भूषण, डा0 भगवान दास तिवारी, साहित्य भवन प्र0 लि0 इलाहाबाद 1980
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आ0 रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, 2002